Padma Bhushan

SHRI RAM NAIK

Shri Ram Naik is an eminent Statesman.

2. Born on 16th April 1934 at Sangli in Maharashtra, Shri Naik did his schooling at Atpadi, Sangli District Maharashtra, secured B.Com.from Pune University and LL.B.from Mumbai University. He is Rashtriya Swayamsevak Sangh (R.S.S.) activist since childhood. He gave up lucrative career and started full time work in capacity of Organizing Secretary of Bharatiya Jana Sangh in 1969. Since then, he has devoted his life fully for the public service.

3. Shri Naik is the only person winning 8 consecutive elections from Mumbai, as an MLA for three consecutive terms (1978-1985) from Borivali Assembly Constituency and as an MP for five successive terms (1989-2004) from Mumbai North Lok Sabha Constituency. Shri Naik practised democratic principle of accountability by presenting Annual Performance Report to the voters and continued the practice even after becoming the Governor of Uttar Pradesh in 2014.He successfully prevailed upon the Government to change the name of 'Bombay' in English and 'Bambai' in Hindi to its original Marathi name 'Mumbai'. As the Governor of Uttar Pradesh, he got changed 'Allahabad to 'Prayagraj' and 'Faizabad' to 'Ayodhya'. He was instrumental in initiating the practice of singing 'Vande Mataram' and 'Jana Gana Mana' in the Parliament from the year 1992. Historical decision of declaring 24th January as the 'Uttar Pradesh Day' was taken at his instance. MPLADS (MP Fund) is his brainchild, which empowered each Member of Parliament to undertake small development projects in his constituency. His Private Member Bill for 'Promotion of Breast Feeding and Ban on Advertisements of Baby Foods' was adopted by the Government and became an Act.

4. Shri Naik is a Railway commuters' activist turned into Minister of State for Railways (Independent Charge). In addition to Railways, he was also Minister of State for Home Affairs, Planning & Programme Implementation and Parliamentary Affairs. He established Mumbai Rail Vikas Corporation (MRVC) for betterment of nearly 80 lakh Mumbai commuters. He was instrumental in starting the world's first 'Special Ladies Local Trains' in Mumbai. His regime as the Cabinet Minister for Petroleum & Natural Gas is known as golden era of petroleum in India. He introduced Ethanol mixing in fuel in the country. In his tenure, 439 Petrol Pumps and LPG Distributorships were awarded to widows/dependents of martyrs of Kargil War and of Parliament House attack.

5. Shri Naik has also been voicing woes of fishermen, leprosy affected persons and project affected persons of Tarapur Atomic Power Plant III & IV. He provided water to Manori - Gorai islands by laying pipes under the sea and electricity to Arnala Island Fort by installing towers in the sea after 50 years of the Independence. Fisherfolks therefore fondly call him 'Prakash Data' (Light Provider). He has penned his memoirs in Maratha Daily 'Sakal'. These were compiled and published in Book titled 'Charaiveti! Charaiveti!!'.

6. Shri Naik is recipient of many literary awards like 'Laxmibai Tilak Atmacharitra Award' by Maharashtra Government, 'Sahitya Shiromani Award' by Hindi - Urdu Sahitya Award Committee, Uttar Pradesh, etc. He has received numerous other awards viz. 'National Eminence Award' by Jagadguru Shankaracharya of Kanchi Kamakoti Peetam, 'Champion of Change - Maharashtra Award for Social Welfare', 'Jeevan Sadhana Gaurav Award' by Savitribai Phule University, Pune, etc.

श्री राम नाईक

श्री राम नाईक एक प्रतिष्ठित राजनेता है।

2. 16 अप्रैल, 1934 को महाराष्ट्र के सांगली में जन्मे, श्री नाईक ने विद्यालयी शिक्षा सांगली जिला के आटपाडी से प्राप्त की और पुणे विश्वविद्यालय से बी.कॉम. तथा मुंबई विश्वविद्यालय से एलएलबी किया। वह बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के कार्यकर्ता हैं। उन्होंने एक लाभप्रद करियर छोड़ दिया और 1969 से ही भारतीय जन संघ के संगठन सचिव के रूप में पूर्णकालिक कार्य करने लगे। तभी से उन्होंने अपना जीवन लोक सेवा के प्रति समर्पित कर दिया ।

3. श्री नाईक मुंबई से लगातार 8 चुनाव जीतने वाले एकमात्र व्यक्ति हैं। वह बोरीवली विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से लगातार तीन बार (1978–1985) विधान सभा सदस्य चुने गए और मुंबई उत्तरी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से लगातार पांच बार (1989–2004) संसद सदस्य चुने गए। श्री नाईक ने मतदाताओं को वार्षिक प्रदर्शन रिपोर्ट प्रस्तुत करके लोकतंत्र में जवाबदेही के सिद्धांत का पालन किया और 2014 में उत्तर प्रदेश का राज्यपाल बनने के बाद भी इस प्रथा को जारी रखा। उन्होंने सरकार द्वारा अंग्रेजी में 'बॉम्बे' और हिंदी में 'बंबई' नाम हटाकर मूल मराठी नाम 'मुंबई' करने के लिए सफल प्रयास किया। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रूप में, उन्होंने 'इलाहाबाद' का नाम 'प्रयागराज' और 'फैजाबाद' का नाम 'अयोध्या' करवाया। उन्होंने वर्ष 1992 से संसद में 'वंदे मातरम' और 'जन गण मन' की वंदना की प्रथा शुरू करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी प्रेरणा से 24 जनवरी को 'उत्तर प्रदेश दिवस' घोषित करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया था। एमपीलैड्स (एमपी फंड) उनकी ही संकल्पना है, जिसके तहत प्रत्येक संसद सदस्य को अपने निर्वाचन क्षेत्र में लघु विकास परियोजनाएं शुरू करने का अधिकार दिया। 'स्तनपान को बढ़ावा देने और बेबी फूड्स के विज्ञापन पर प्रतिबंध' के लिए उनके गैर सरकारी सदस्य विधेयक को सरकार द्वारा स्वीकार किया गया और यह एक अधिनियम बन गया।

4. श्री नाईक एक रेलवे यात्री अधिकार कार्यकर्ता रहे हैं जो रेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बने। रेलवे के अलावा, वह गृह मंत्रालय, योजना और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में भी राज्य मंत्री थे। उन्होंने मुंबई के लगभग 80 लाख रेल यात्रियों की बेहतरी के लिए मुंबई रेल विकास निगम (एमआरवीसी) की स्थापना की। मुंबई में विश्व की पहली 'स्पेशल लेडीज लोकल ट्रेन' शुरू करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल भारत में पेट्रोलियम का सुनहरा युग माना जाता है। उन्होंने देश में ईंधन में इथनॉल मिश्रण की शुरुआत की। उनके कार्यकाल में, कारगिल युद्ध और संसद भवन हमले के शहीदों की विधवाओं/आश्रितों को 439 पेट्रोल पंप और एलपीजी वितरक लाइसेंस प्रदान किए गए।

5. श्री नाईक मछुआरों, कुष्ठ पीड़ितों और तारापुर परमाणु ऊर्जा संयंत्र III और IV के परियोजना प्रभावित लोगों के लिए भी आवाज उठाते रहे हैं। उन्होंने स्वतन्त्रता के 50 वर्ष बाद समुद्र के नीचे पाइप बिछाकर मनोरी–गोराई द्वीपों को पानी और समुद्र में टावर लगाकर अर्नाला आइलेंड फोर्ट में बिजली उपलब्ध कराई। इसलिए, मछुआरे उन्हें 'प्रकाश दाता' कहकर बुलाते हैं। उन्होंने मराठा दैनिक 'सकल' में अपने संस्मरण लिखे हैं। इन्हें 'चरैवेती! चरैवेती!!' नाम से पुस्तक रूप में संकलित करके प्रकाशित किया गया था।

6. श्री नाईक को महाराष्ट्र सरकार द्वारा 'लक्ष्मीबाई तिलक आत्मचरित्र पुरस्कार' हिंदी–उर्दू साहित्य पुरस्कार समिति, उत्तर प्रदेश द्वारा 'साहित्य शिरोमणि पुरस्कार' आदि जैसे कई साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं यथा कांची कामकोटी पीठम के जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा 'नेशनल एमिनेंस अवार्ड', समाज कल्याण के लिए 'चैंपियन ऑफ चेंज फॉर सोशल वेलफेयर अवार्ड', महाराष्ट्र पुरस्कार, सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे द्वारा 'जीवन साधना गौरव पुरस्कार' आदि।